जीविका
ग्रामीण विकास विभाग, बिहार सरकार

जीविका समाचार पत्रिका

॥ माह – नवम्बर 2024 ॥ अंक – 52 ॥ केवल आंतरिक वितरण हेतु॥

अन्दर के पृष्ठों में...

जीविका दीदी से बनी लखपति दीदी
(पृष्ठ – 02)

जीविका की मदद से आत्मनिर्भरता की राह हुई आसान
(पृष्ठ – 03)

अरण्यक एग्री प्रोड्यूसर कंपनी लिमिटेड, पूर्णिया
(पृष्ठ – 04)

जीविका : आर्थिक सशक्तीकरण से सामाजिक उत्थान

बिहार सरकार की महत्वाकंसी परियोजना, जीविका, महिला सशक्तिकरण के लिए निरंतर क्रियाशील है, जिसका उद्देश्य ग्रामीण समुदायों, विशेषकर महिलाओं, को आर्थिक रूप से सशक्त बनाना और उनके सामाजिक उत्थान को सुनिश्चित करना है। इस पहल के तहत, महिलाएँ स्वयं सहायता समूह के माध्यम से संगठित होती हैं एवं वित्तीय सेवाओं तक पहुँच प्राप्त करती हैं। विभिन्न जीविकोपार्जन गतिविधियों को संचालित कर अपने जीवन स्तर को सुधारने का प्रयास करती हैं। जीविका न केवल उनके आर्थिक सशक्तीकरण की दिशा में काम करती है, बल्कि इसके जरिए सामाजिक सुधार और समग्र विकास की राह भी प्रशस्त करने में सहयोग प्रदान करती है।

आर्थिक सशक्तीकरण के माध्यम से बदलाव

जीविका के तहत महिलाओं को स्वयं सहायता समूहों में संगठित किया जाता है, जहाँ वे आपसी सहयोग से बचत और ऋण का प्रबंधन करती हैं। जीविका द्वारा इन्हें आवश्यक प्रशिक्षण और वित्तीय सहायता प्रदान की जाती है, ताकि वे छोटे व्यवसाय, कृषि, पशुपालन, हस्तशिल्प और अन्य उद्यमों में अपनी दक्षता बढ़ा सकें। इससे न केवल उनकी आमदनी बढ़ती है, बल्कि वे आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर भी बनती हैं। उदाहरण के तौर पर, कई महिलाएँ जीविका के माध्यम से स्वरोजगार की ओर अग्रसर हुई हैं, जिससे उनके परिवार की आय में वृद्धि हुई है और वे अब गरीबी रेखा से ऊपर जीवन यापन कर रही हैं।

सामाजिक सशक्तीकरण की दिशा में प्रगति

आर्थिक सशक्तीकरण के साथ–साथ जीविका ने महिलाओं के सामाजिक जीवन में भी व्यापक बदलाव किए हैं। पहले जहां ग्रामीण महिलाएँ अपने पारंपरिक भूमिकाओं में सीमित रहती थीं, वहीं अब वे जीविका के माध्यम से सामूहिक रूप से निर्णय लेने की प्रक्रिया में शामिल होती हैं। इससे न केवल उनका आत्मविश्वास बढ़ा है, बल्कि उनकी सामाजिक पहचान भी बढ़ी है। इसके अलावा, जीविका ने महिलाओं को विभिन्न सामसजिक मुद्दो यथा शिक्षा, स्वास्थ्य, स्वच्छता, और पोषण जैसे विषयों पर जागरूक किया है, जिससे वे अपने परिवारों और समुदायों के बेहतर भविष्य के निर्माण में योगदान दे रही हैं।

नेतृत्व क्षमता का विकास

जीविका के माध्यम से महिलाएँ न केवल आर्थिक गतिविधियों में भाग ले रही हैं, बल्कि वे नेतृत्व की भूमिकाओं में भी अग्रनी भुमिका निभा रही हैं। स्वयं सहायता समूहों की बैठकें, पंचायत स्तर पर सामुदायिक संगठनों की भूमिका और विभिन्न सरकारी योजनाओं के कार्यान्वयन में उनकी सहभागिता ने उन्हें नेतृत्व क्षमता प्रदान की है। कई महिलाएँ अब अपने समुदायों में नेतृत्व कर रही हैं और स्थानीय विकास प्रक्रियाओं में महत्वपूर्ण योगदान दे रही हैं। इस प्रकार, जीविका महिलाओं को केवल आर्थिक रूप से सशक्त नहीं कर रही है, बल्कि उन्हें समुदाय को अग्रणी बनाने में भी मदद कर रही है।

गरीबी उन्मूलन में भूमिका

जीविका का एक प्रमुख लक्ष्य ग्रामीण गरीबी को कम करना है। जब महिलाएँ आर्थिक रूप से मजबूत होती हैं, तो उनके परिवारों का जीवन स्तर भी सुधरता है। बच्चों की शिक्षा, स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुँच तथा पोषण में सुधार होता है। इस पहल के माध्यम से, हजारों परिवार गरीबी से बाहर निकलने में सक्षम हुए हैं। जीविका द्वारा दिए गए ऋणों का उपयोग ग्रामीण महिलाएँ कृषि, व्यापार एवं अन्य जीविकोपार्जन गतिविधियों में करती हैं, जिससे उनकी आय बढ़ती है।

सामुदायिक सहयोग और एकजुटता

जीविका ने ग्रामीण समुदायों में सहयोग और एकजुटता की भावना को जागृत किया है। स्वयं सहायता समूहों के माध्यम से महिलाएँ एक–दूसरे की मदद करती हैं और सामूहिक रूप से चुनौतियों का सामना करती हैं। इस प्रकार, जीविका ने न केवल व्यक्तिगत सशक्तिकरण पर ध्यान केंद्रित किया है, बल्कि सामूहिक सशक्तिकरण की दिशा में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया है। जिससे उनके सामाजिक दायरे का विस्तार हुआ है और वे समुदाय की मजबूत इकाई बना रही है।

आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ते कदम

दिव्या दीदी की कहानी महिला सशक्तिकरण और आर्थिक आत्मनिर्भरता का प्रेरक उदाहरण है। पटना ज़िले के बख्तियारपुर प्रखंड के लखिपुर गांव की रहने वाली दिव्या दीदी हीना जीविका स्वयं सहायता समूह की सदस्य है। वह 2021 में स्वयं सहायता समूह से जुड़ी। पहले वह एक गृहिणी थीं, जो परिवार के लिए सीमित दायरे में कार्य करती थीं। लेकिन जीविका से जुड़ने के बाद उन्होंने अपने आर्थिक विकास की दिशा में कदम बढ़ाया।

सबसे पहले उन्होंने 15 हजार रुपये का ऋण लेकर गाय पालन शुरू किया। गाय पालन उनके लिए व्यावहारिक विकल्प साबित हुआ, क्योंकि यह भैंस पालने की तुलना में कम मेहनत वाला है और घर की जिम्मेदारियों के साथ भी सामंजस्य बैठता था। धीरे–धीरे, उन्होंने अपने व्यवसाय का विस्तार किया। वर्ष 2023 में, मुद्रा लोन स्कीम के तहत 1 लाख 60 हजार रुपये का ऋण लेकर उन्होंने दो और गायें खरीदीं और पशु शेड का निर्माण कराया। पुनः फरवरी 2024 में एक लाख रुपये का ऋण लेकर उन्होंने मुर्गी पालन भी शुरू किया और पीएमएफएमई योजना के तहत घी के व्यवसाय के लिए 40,000 रुपये का ऋण भी प्राप्त किया।

आज दिव्या दीदी 8 गायों के साथ पशुपालन का व्यवसाय सफलतापूर्वक चला रही हैं। इन गायों से वह प्रतिदिन 70–75 लीटर दूध प्राप्त करती हैं, जिसे सहकारी समिति के जरिए बेचती हैं। इसके साथ ही वह दही, पनीर और घी बनाकर भी बेचती हैं। पशुओं से प्राप्त गोबर का उपयोग करके भी वह अतिरिक्त आय कमा रही हैं। वर्तमान में, वह औसतन 17–20 हजार रुपये मासिक आमदनी कर रही हैं।

आर्थिक प्रगति के साथ–साथ वह सामाजिक रूप से भी एक प्रेरणाश्रोत बन चुकी हैं। उनका सपना है कि अपने गांव में डेयरी सहकारी समिति का संचालन करें और अपने व्यवसाय को और बड़े स्तर पर स्थापित करें।

जीविका दीदी से बनी लखपति दीदी

सीतामढ़ी जिला के पुपरी प्रखंड के बछारपुर की रहने वाली पूनम देवी अपने 2 बच्चों के साथ गावँ में रहती थी, उनके पति चुल्हाई ठाकुर मुंबई में एक स्टील फैक्ट्री में मजदूर का काम करते थे। मजदूरी कम होने से दीदी को परिवार का भरण–पोषण करने में बहुत कठिनाई होती थी। किसी तरह दीदी अपने परिवार का भरण–पोषण कर रही थी। वर्ष 2003 में दीदी के पति की मृत्यु हो गयी, जिस कारण से परिवार के भरण–पोषण में गंभीर समस्या उत्पन्न हो गयी थी। दीदी किसी तरह अपने परिवार के लिए 2 वक्त के भोजन का प्रबंध करती थी। दीदी ने समस्याओं के आगे हार न मानते हुए समस्याओं से लड़ने का संकल्प लिया। दीदी ने खेती–बारी करना प्रारंभ किया, साथ हीं साथ दीदी ने मवेशी पालन का कार्य भी शुरू किया।

वर्ष 2019 में पूनम देवी भोला जीविका स्वयं सहायता समूह से जुड़ी। समूह से जुड़ने के बाद दीदी को जीविकोपार्जन हेतु उचित मार्गदर्शन मिला जिसके तहत दीदी ने किराना दुकान शुरू करने की इच्छा प्रकट की। फलस्वरूप, दीदी ने वर्ष 2020 में किराना दुकान खोला जिसके लिए दीदी ने अपने समूह से वर्ष 2020 में 40000 रूपये ऋण लिया तथा वर्ष 2021 में पुनः 30000 रूपये ऋण लेकर अपने किराना दुकान में जनरल स्टोर का सामान बेचना भी शुरू की। आमदनी बढ़ने से दीदी की समस्याओं का निवारण धीरे–धीरे होने लगा।

वर्तमान में दीदी अपने व्यवसाय से 12000 से 16000 रूपये प्रति माह आमदनी कर रही है, जिससे वो अपने परिवार का अच्छे से भरण–पोषण करने के साथ–साथ अपने बच्चों को अच्छी शिक्षा भी दिलवा रही है।

दीदी अपने किराना दुकान को विस्तारित करना चाहती है ताकि आमदनी में बढ़ोतरी हो।

जीविका की मदद से आत्मनिर्भरता की राह हुई आसान

गया जिले के नीमचक बथानी प्रखंड के मई पंचायत के दयाली बिगहा गांव की शोभा कुमारी, बजरंगबली जीविका स्वयं सहायता समूह की सदस्य हैं। शोभा का जीवन एक साधारण गृहिणी के रूप में शुरू हुआ। परिवार की आय सीमित होने से उन्हें आर्थिक चुनौतियों और संसाधनों की कमी के कारण उनके परिवार को कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा था। वर्ष 2017 में जब वह जीविका स्वयं सहायता समूह से जुड़ीं, तो उनके जीवन में सकारात्मक बदलाव की शुरुआत हुई।

समूह की बैठकों में शामिल होने और बचत करने की आदत विकसित हुई और शोभा ने ऋण लेना सीखा। सबसे पहले, उन्होंने तीस हजार रुपये का ऋण लिया और बाद में वर्ष 2023 में एक लाख रुपये का ऋण लेकर मुर्गी पालन शुरू किया। आज उनके मुर्गी फार्म में 1000 से अधिक मुर्गियाँ हैं, जिन्हें वह और उनके पति मिलकर संभालते हैं। हर चक्र में मुर्गियाँ 45 दिनों में तैयार हो जाती हैं, जिससे उन्हें 15–20 हजार रुपये का मुनाफा होता है। इसके अलावा उन्होंने मछली पालन और गाय पालन भी शुरू किया। वर्तमान में उनके पास दो गायें हैं। दोनों गाय मिलाकर प्रतिदिन 10 लीटर दूध देती है, जिससे उन्हें अतिरिक्त आय होती है।

शोभा और उनके पति खेती का कार्य भी करते हैं। खेत में अनाज और सब्जियाँ उपजाते हैं, जो उनके परिवार की आवश्यकताओं को पूरा करती हैं। उन्हें अनेक सरकारी योजनायों का लाभ भी मिला है, प्रधानमंत्री आवास योजना के तहत नया घर निर्माणाधीन है। शोभा कुमारी की कहानी मेहनत, दृढ़ संकल्प और जीविका समूह की मदद से आर्थिक सशक्तिकरण का प्रेरक उदाहरण है।

संघर्ष से आत्मनिर्भरता तक की यात्रा

बांका जिले के कटोरिया प्रखंड के कटियारी पंचायत स्थित इनारावरण गांव की रहने वाली मुनिया मुर्मू, वनवासी जीविका स्वयं सहायता समूह की सदस्य हैं। वह राधा जीविका महिला ग्राम संगठन और नया सवेरा जीविका महिला संकुल संघ से भी जुड़ी हैं। मुनिया दीदी की जीवन यात्रा गरीबी और संघर्ष से शुरू हुई। कड़ी मेहनत और जीविका के सहयोग से उन्होंने सफलता हासिल की है।

पहले, मुनिया मुर्मू और उनके पति जंगल से लकड़ी काटकर, उसे बेचकर किसी तरह गुजारा करते थे। इस मामूली आय से परिवार का भरण–पोषण करना बेहद कठिन था। उनकी जीवनशैली बेहद सादगीपूर्ण था, लेकिन बदलाव की शुरुआत वर्ष 2016 में हुई, जब मुनिया दीदी जीविका स्वयं सहायता समूह से जुड़ी।

वर्ष 2021 में, मुनिया दीदी ने जीविका से 20,000 रुपये का ऋण लेकर एक नर्सरी व्यवसाय की शुरुआत की। उन्होंने समूह से पुनः ऋण लेकर इसे विस्तारित किया। शुरू में वह लीज पर ली गई जमीन पर नर्सरी शुरू की थी, लेकिन धीरे–धीरे अपने नर्सरी व्यवसाय की आमदनी और बचत से उन्होंने 8 कट्ठा जमीन खरीदी। अब वह अपनी खुद की जमीन पर नर्सरी का संचालन कर रही हैं।

मुनिया दीदी की नर्सरी अब इलाके में प्रसिद्ध हो चुकी है। उनकी नर्सरी में मिर्च, टमाटर, गोभी, बैगन, और अन्य सब्जियों के पौधे मिलते हैं। इससे उन्हें सालाना 2,00,000 से 2,50,000 रुपये की आमदनी होती है। इसके अलावा, मशरूम उत्पादन से भी उन्हें प्रति वर्ष 20,000 से 25,000 रुपये की आय हो जाती है। साथ हीं जीविका मित्र के रूप में काम करने से भी उन्हें हर माह 4,000 से 5,000 रुपये के बीच आय हो रही है।

अब मुनिया दीदी का जीवन आर्थिक रूप से सबल है। उनके दोनों बच्चें शिक्षा प्राप्त कर रही हैं। उनकी कहानी इस बात का प्रमाण है कि दृढ़ संकल्प और मेहनत से जीवन में सकारात्मक बदलाव लाया जा सकता है।

अरण्यक एग्री प्रोड्यूसर कंपनी लिमिटेड, पूर्णिया

अरण्यक एग्री प्रोड्यूसर कंपनी लिमिटेड की स्थापना 25 नवम्बर 2009 को पूर्णिया में हुयी। इस कंपनी के सभी 5733 शेयर धारक जीविका स्वयं सहायता समूहों से जुड़ी दीदियाँ हैं। वर्तमान में अरण्यक एग्री प्रोड्यूसर कंपनी लिमिटेड में पूर्णिया जिले के चार प्रखंड यथा – धमदाहा, बरहरा कोठी, बनमनखी, भवानीपुर तथा कटिहार जिले के कोढा प्रखंड की जीविका दीदियाँ इसके शेयरधारक के रूप में शामिल हैं। वर्तमान में 122 मक्का उत्पादक समूह का कंपनी के साथ जुड़ाव है। इस कंपनी का कार्यालय पूर्णिया में स्थित है। अरण्यक एग्री प्रोड्यूसर कंपनी लिमिटेड भारत सरकार के कंपनी एक्ट 1956 तथा 2013 के तहत निबंधित है।

कंपनी का संचालन निदेशक मंडल के द्वारा किया जाता है। निदेशक मंडल में 15 सदस्य हैं जो कंपनी के हित में नीति निर्माण समेत इसके सफल संचालन में सहयोग प्रदान करते हैं। आवश्यकता को देखते हुए कंपनी के प्रभावी संचालन के लिए एक मुख्य कार्यकारी अधिकारी नियुक्त हैं। इन्हें सहयोग प्रदान करने के लिए एक लेखापाल, एक एम.आई.एस. ऑपरेटर तथा दो गोदाम प्रभारी भी कार्यरत हैं।

कंपनी की स्थापना का मुख्य उद्देश्य इसके शेयरधारकों को उनके उत्पादों का सर्वोत्तम मूल्य प्रदान करना है, साथ ही उच्च गुणवत्तापूर्ण कृषिगत उत्पादक सामग्री उपलब्ध कराना है। कंपनी की पहल से शेयरधारकों को उनके उत्पादों का तीन दिन के अन्दर भुगतान, बेहतर बाजार भाव तथा सही माप की सुविधा मिल रही है। सबसे अधिक शेयरधारक जिले के धमदाहा प्रखंड के हैं, जिनकी संख्या 2601 है। धमदाहा प्रखंड में कंपनी द्वारा 6 संग्रहन केन्द्र (कलेक्शन सेंटर) क्रियाशील है। इन केन्द्रों के माध्यम से कोई भी किसान अपने उत्पादों को बेच सकते हैं। इससे उन्हें अपने उत्पाद का सही मूल्य मिल पाता है। जिले के धमदाहा प्रखंड में कंपनी का 150 टन की क्षमता का एक गोदाम है। अभी इस गोदाम में बीज तथा उर्वरक का भंडारण किया गया है। कंपनी के प्रतिनिधियों के द्वारा समय–समय पर जीविका से जुड़ी दीदियों को फसल के बेहतर उत्पादन को लेकर जानकारी तथा प्रशिक्षण भी दिया जाता है। इसे ग्राम संसाधन सेवी (वी.आर.पी.), कृषि उद्यमी, एवं अन्य सामुदायिक पेशेवरों द्वारा इस प्रशिक्षण को जीविका के स्वयं सहायता समूहों तक पहुँचाया जा रहा है।

कंपनी का व्यापार क्षेत्र

वर्तमान में कंपनी के पास विभिन्न प्रभेदों के बीज, रासायनिक उर्वरक, जैविक उर्वरक के व्यापार तथा निर्यात का अनुज्ञप्ति (लाइसेंस) समेत भारत सरकार से फूड सेफ्टी एंड स्टैण्डर्ड अथॉरिटी ऑफ़ इंडिया की मान्यता प्राप्त है। वर्तमान में कंपनी के द्वारा मक्का, खाद, बीज, मखाना तथा केला का व्यापार किया जा रहा है।

वित्तीय वर्ष 2024–25 की दूसरी तिमाही तक अरण्यक एग्री प्रोड्यूसर कंपनी के द्वारा कुल 15.5 करोड़ रुपये से अधिक का व्यापार किया गया है। जिसमें कंपनी को 18 लाख रुपये का शुद्ध मुनाफ़ा प्राप्त हुआ है। कंपनी का लक्ष्य अगले दो वर्षों में अपने कार्यक्षेत्र का विस्तार करते हुए जिले के श्रीनगर, पूर्णिया पूर्व तथा कृत्यानंद नगर प्रखंड से नए शेयरधारकों का जुड़ाव समेत अपने सालाना व्यापार को सौ करोड़ रुपये तक पहुँचाना है।

कंपनी की व्यवसायिक विवरणी –

वित्तीय वर्ष	वस्तु प्रकार	किसान द्वारा लेन–देन की संख्या	खरीदारी (मीट्रिक टन में)	टर्नओवर (रूपये में)
2023–24	उर्वरक / खाद	2802	850	14595511
	उर्वरक सूक्ष्म पोषक	405	5	671154
	मक्का बीज	398	20	8640609
	धान बीज	151	9	1811402
	गेंहू बीज	50	9	352700
	जूट बीज	10	1	72920
	किचन गार्डन	5847	5847	562405
	मक्का खरीदारी	469	4151	74120792
	राजमा	1	1	87700
	मखाना खरीदारी	1	1	192088
कुल		**10134**	**10894**	**101107281**

जीविका, बिहार ग्रामीण जीविकोपार्जन प्रोत्साहन समिति, विद्युत भवन – 2, बेली रोड, पटना – 800021, वेबसाइट : www.brlps.in

- संपादकीय टीम
- श्रीमती महुआ राय चौधरी –कार्यक्रम समन्वयक (जी.के.एम.)
- श्री पवन कुमार प्रियदर्शी – राज्य परियोजना प्रबंधक (संचार)

संकलन टीम
- श्री विकास राव – प्रबंधक संचार, भागलपुर
- श्री राजीव रंजन – प्रबंधक संचार, नवादा
- श्री रौशन कुमार – प्रबंधक संचार, लखीसराय
- श्री बिप्लब सरकार – प्रबंधक संचार